JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ब्रजरज में बुंदेली ग़ज़ल

राबिया परवीन

पीएच. डी. शोधार्थी (हिंदी विभाग)

(हिंदी अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र)

महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर (म. प्र.)

शोध निर्देशक डॉ कुंजीलाल पटेल -

सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)

(हिंदी अध्ययन शाला एवं शोध केंद्र)

महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर (म. प्र.)

सत्र 2022 -23

प्रस्तावना -

ग़ज़ल एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है- प्रेमिका से वार्तालाप। इसमें कम से कम 5 व अधिक से अधिक 17 शे'र हो सकते हैं,परंतु कुछ काव्यशास्त्रज्ञों के अनुसार यह अधिकतम सीमा 25 भी हो सकती है। सारे शे'र एक ही रदीफ़ और काफ़िए (इस शब्दों का अर्थ नीचे दिया है) में होते हैं। यह ज़रूरी नहीं कि हर शे'र का मज़मून (विषयवस्तु) एक ही हो, यह अलग भी हो सकता है। पहला शे'र मत्ला कहलाता है । इसके दोनों मिसरे (पंक्तियाँ) हम काफ़िया (सानुप्रास) होते हैं। अंतिम शे'र मक़्ता कहलाता है जिसमें शाइर अपना तख़ल्लुस (उपनाम) लाता है। ग़ज़ल को उर्दू शायरी में अपना अलग मकाम हासिल है। ये विधा फारसी और अरबी भाषा से उर्दू में आयी मुख्य तौर पर ग़ज़ल को महबूब से बात करने का जो तरीका आशिक़ आशिक़ अपने अंदाज़ मे जो मन की उल्झनें और परेशानी का बयान करता है वो ग़ज़ल कहलाती है।

मैं अपने शब्दों में कहूं तो ग़ज़ल वो संवाद है जो कि किसी व्यक्ति के हृदय की बेचैनीयों और विचारों के मन्थन से जो कुछ उत्पन्न होता है ग़ज़ल उसी को कहते हैं ग़ज़ल का दायरा आज के ज़माने में केवल माशूका से या महबूबा से बात कहने का संकुचित शब्द तक ना होकर जन सामान्य तक के हर समस्या, चाहे वो किसी व्यक्ति विशेष के बारे में हो या फिर किसी समाज, धर्म, राजनीतिक समस्या, देशभक्ति,

या फिर पर्यावरण तक के विस्त्रित विषय पर अपनी राय रखना या फिर इनमें आने वाली समस्याओं को कविता या शायरी के माध्यम से समाज के आगे प्रस्तुत करने का माध्यम बन चुकी है।

ग़ालिब की एक ग़ज़ल के कुछ अल्फाज-

कोई उम्मीद बर नहीं आती।

कोई सूरत नज़र नहीं आती ।।

मौत का एक दिन मुअय्यन हैं।

नींद क्यूं रात भर नहीं आती ।।

आगे आती थी हाले दिल पे हंसी।

अब किसी बात पर नहीं आती ।।

हम वहां हैं जहां से हमको भी।

कुछ हमारी ख़बर नहीं आती ।।

काबा किस मुंह से जाओगे ।'ग़ालिब'

शर्म तुमको मगर नहीं आती ।।

इसी प्रकार आगे मायूस सागरी जी की बुंदेली गजल प्रस्तुत हैं जो राधा कृष्ण के प्रेम पर मायुस सागरी जी ने अपने महाकाव्य ब्रजरज में समाहित की हैं। जलकारों की गजलों में विभिन्न प्रकार की प्रेम परख बातें, सामाजिक मुद्दे, समस्याएं और देश भक्ति बखूबी देखी जा सकती हैं। लेकिन सागरी जी की गजलें यदि उनमें अपनी अलग पहचान बना पाई हैं तो उसका मूल कारण है उन गजलों का बुंदेली में लिखा जाना और यही इसके पुनर्पाठ का सबसे बडा प्रेरक तत्व भी हैं। अपनी बोली का सोंधापन भला किसे नही भाता।

संयोग श्रृंगार रस की गजल प्रस्तुत है जिसमें राधा और कृष्ण की प्रेम मिलन का वर्णन मिलता है ऐसी गजल बुंदेली में मिलना हम पाठकों के लिए बहुत बड़े सौभाग्य की बात है कि हम ग़ज़ल का भी आनंद बुंदेली भाषा में ले रहे हैं।

सोसतइ मन में हम लजा रय हैं,

हमसें मिलबे खों स्याँम आ रय हैं

अब झकत कां है छब,मनोहर की ,

कैसे कय सुद सपन सुहा रय है

आउने नइंयें जब बृजै उनखों

काय द्रग-दरपनों पै छा रय है

ज्ञान हेरन सें तै ने तक पै हैं

अपनी स्याँमां खो स्याम का रय है

धर के अनतर में प्रीत के पलछिन-

स्याँम से स्याँम सुद बचा रय है

कित्ते सुख दय है स्याँम ने हमखों

सोसतइ आसुओं नहा रय है

मोरे असफेर ओर को हुइए

स्याँम सुनदर सुदों मे आ रय है

दुसरी गजल के कुछ मिसरे-

तुम अपने गरे कौं कबे हार कर हौं

कनैया सखी से कबे प्यार कर हौं

किसन जोइ आसा जगी रैत मन में

अब उपकार कर हौं, अब उपकार कर हौं

कबे अस नैनो को तुम बनहों काजर

कबे मीत सपनो को साकार कर हौं

भला और कीकौ भरोसों है राधे

तुमई हौं तुमई मोरो उद्दार कर हौं।

इसी प्रकार आगे वियोग श्रृंगार की गजल प्रस्तुत है जिसमें श्री कृष्ण से वियोग की व्यथा गजल में समाहित की गई है।

भाग में जे दिना भी आ गए हैं

श्याम खौं हेरबे लला रय हैं।

सुख से बड़के नेंकैसे होवे दुख

श्याम सुंदर ने चावसेदर हैं।

फूलखिलतई, परागखौं दौरत

कब भ्रम रसोई काऊ कै भय हैं।

कोऊ खौं का बताएं मन सुख हम,

श्यामसुंदर को जप केंतर रहे हैं।

निष्कर्ष –

बुंदेली गजलों के माध्यम से सागरी जी ने ब्रजरज में श्रीकृष्णऔर राधा के प्रेम को एक नया रुप देने का सफल प्रयास किया हैं। गजले हम उर्दू मे पढा करते थे लेकिन बुन्देली गजल का एक अपना ही अलग आन्नद है। जो ब्रजरज कि गजलो को पढ़कर हर पाठक को मिलता हैं। बुंदेली गजल अपने आप में अद्वितीय स्थान रखती है। मयूर सागरी जी ने अपनी रचना ब्रजराज के अंतिम खंड में बुंदेली गजलों को लिखकर एक अनोखा बुंदेली गजलों का संग्रह कोहमारे सामने प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ –

१उर्दू शायरी- नक्स और रंग

(लेखक- बालकृष्ण)

२मोहम्मद आशिफ

(रेखता संगठन)

३मोहित भटनागर (लेखक)

४ब्रजरज कि गजल

(लेखक- मायूस सागरी)

५कोई उम्मीद बर नही आती

(शायर- मिर्जा गालिब)

६दैनिक आचरण सागर साहित्य एवं चिंतन

वर्षा सिंह